

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

५२२८ (२२८)

ग्रंथ नाम

विश्वकाव्ये.

सावित्री उपासकान, दामाजीचे चरित्र.

विषय

मराठी काव्य.

~~मराठी~~  
मराठी काव्य

११  
३२-२,३१  
१३

१ साहित्यसंस्थान  
२ ~~मराठी~~ मराठी भाषा संस्थान पुणे शहर ठा. १  
३ साहित्य मंडळ मराठी भाषा संस्थान ठा. १

११६/५२२४  
२२८

काराणानिमित्त-मिरजमिणी



स्फुट काव्य संग्रह

मि. कु. च. डावणी

मराठी-स्फुट काव्ये

क-१३-६२१०-

(1)

दुमसेनराजेश्वर ॥ सखवानतयाचाकुमर ॥ मनीषावो  
निष्प्रतार ॥ येतीजालीस्वदेष्टा ॥ १८ ॥ तवअश्वपतीया  
पुलासदनी ॥ सेटीपातनेनारंदमुनी ॥ येरेबेसुनी  
कनकासनी ॥ सुखगे ॥ तमि ॥ १९ ॥ श्रीशेदेखोनी  
याराजा ॥ नारदसुतोम ॥ जा ॥ आळसदीसतोवी  
काहकाजा ॥ हेकारणमजसाग ॥ २० ॥ राजोसुणेयात  
रेस्वरी ॥ स्वयेगेलीसवरवीचारी ॥ आलीयावृतां  
तदीस्तारी ॥ कळलानाहीआमुते ॥ २१ ॥ वरवीचारी



(2)  
॥ बीचारी बीधीनं दन ॥ वरपाहिला कै चा कवण ॥ ते ॥  
॥ ह्मणे पवीत्र सखान ॥ ह्युम छेन या सजु ॥ २२ ॥ तो ये ॥  
॥ कमानला मांझे ये बीता ॥ तवे ब्राह्मणी आणी ॥  
॥ लीवार्ता ॥ ह्मणती ॥ नर्या ॥ माजी पडलान् ॥  
॥ पवर ॥ २३ ॥ अंधराज ॥ गुणी ॥ सार्ये सहीतदा ॥  
॥ वडीलावनी ॥ फळमुळजळा सनी ॥ सेवोनी काळ ॥  
॥ कर्मी तसे ॥ २४ ॥ अैसी अैकोनी दुःस्थीनवार्ता ॥  
॥ कन्येलागी प्रबोधी पीता ॥ सखान ह्यजुनी पत्नी ॥

(2A)

- ॥ वर आणी कवी नारी ॥ २५ ॥ ते लहणे जी न घडे जैसे ॥  
॥ ये क बरी लालो मानसे ॥ ते चित आणी कीया स्पशे ॥  
॥ वीप्ती चारस्य धर्मी ॥ २६ ॥ नारद लहणे गुण वंते ॥ आ  
॥ णी ये क दो श त गते ॥ ज वी णे आणी काते ॥  
॥ ज्ञान नाही जाणा वर ॥ १ ॥ राजा लहणे रूसी सत्त  
॥ मा ॥ प्र ग ट करु नी दा ख वी आ ल्हा ॥ गु श वे उ नी मा  
॥ हा स्र मा ॥ मा सी न घाली स्वा मी या ॥ २७ ॥ नारद ल

२

(3)

॥ ओ अव धारी ॥ स्वल्प आय श्य काळ च क्री ॥ जेष्ट शु धर  
॥ बीवारी ॥ नृस्य अहे सस्य वाना ॥ २५ ॥ ते लणे मी पती वृत्ता  
॥ जीणे न से लजरी सर्ती ॥ अज्ञी अथवा वा षे ज्ञातां ॥ मर  
॥ ण दीव स सारी रे ॥ ण मा बो ता ता लौक ॥ अ  
॥ थ वा वां चो कल्प ये वा ॥ य वा ना वी षा अने क ॥ वरणे  
॥ ना ही सर्व था ॥ ३१ ॥ नी र्धो र दे खे नी अं सरी ॥ नार द ह  
॥ णे ध न्य कु मारी ॥ स स्य वा ना ते तु वरी ॥ सर्व क ल्या



(3A)  
॥ णमीकर्ता ॥ ३१ ॥ देखो नीक ये चे मनोगतं ॥ सामो ग्री  
॥ घे उनी समस्त ॥ राजा पातला वनात ॥ धूम छे ना ॥  
॥ जब की फे ॥ ३२ ॥ तं द्या ॥ करी वी नती ॥ नगर  
॥ देश राजसंपती ॥ वि ॥ शनी वना प्रती ॥ दरी द्रश  
॥ ने द व डी ले ॥ ३३ ॥ द्र ॥ उनी जालो अंधा ॥ अब  
॥ लक्ष्मीने के ले मंद ॥ फळ मुळ जळ कंद ॥ से उनी का

(4)

॥ ठकमीतसे ॥ ३५ ॥ आपणासमान पाहोनी राजा ॥ शुभ ॥  
॥ रीवोपीजेहेसगुणासुजा ॥ मातेदेखोनीसाबतुजा ॥ बी  
॥ कृतीनीघेकैसेनी ॥ ३६ ॥ पुढीसंपदाकोटीवरी ॥ स  
॥ ह्यवानादोघलीकुमा ॥ न्याउनीवनगोव्हरी ॥  
॥ कुडुंबामासीअना ॥ तीणेह्यजीलीवस्त्र  
॥ सरणें ॥ धरीतीजालीवल्कलवसनें ॥ तउपत्रस्वेता ॥  
॥ वर्णे ॥ प्रीतीकणीशोभती ॥ ३७ ॥ त्वासुससरयाची

(4A)

- ॥ सश्रुषा ॥ शिखरासमानमानीपुरुषा ॥ कुटुंबा माजीय  
॥ नारीसा ॥ वीरामसावदावीना ॥ ३९ ॥ अत्रतारवीष्णुचे  
॥ अवयव ॥ तेआश्रयीनारसर्वे ॥ असामानुनीअसे  
॥ दक्षाव ॥ सेवासुरेव ॥ ४० ॥ ब्रह्मिरेउनीब्रह्मभा  
॥ वना ॥ देवद्विषक्रपीज ॥ अनीष्ठाकरिभाजन ॥ ब्रह्म  
॥ सुरवेसंतुष्ट ॥ ४१ ॥ नीः शशरेनरपाथीवि ॥ करिपुरुशा  
॥ चीचरणशेवा ॥ द्विष्टीनाणीदरिद्रभावा ॥ शेवासुरेवं  
॥ करितसे ॥ ४२ ॥ नारदेसांगीतलादिवसु ॥ तोलेखी

(5)

- ॥ तआलीमासेमासु ॥ चवारिदिवसान्ना अवकाशु ॥  
॥ उरलाभ्युकाळाते ॥ ४३ ॥ तीनदिवसउपोशणे ॥  
॥ नेद्येफळमूळजीवन ॥ ज्ञानेतेनीवणि ॥ नकरीमाते  
॥ सर्वथा ॥ ४४ ॥ तेमते ॥ शीयाअस्तमानां ॥ फळे  
॥ मक्षीनतुमचीआशा ॥ केनसप्तवाना ॥ परम  
॥ प्रीतीप्रीयेची ॥ ४५ ॥ ॥ येउनीयांहाती ॥ फआणावया  
॥ चैपार्थी ॥ जाताजाल्नावनाप्रती ॥ सार्येवारीआग्रहे ॥ ४६ ॥  
॥ नायकोनसीचीयावचना ॥ फळालागीनीघालाव

(5A)  
॥ नो ॥ सवेवालीलीपवीत्रांगना ॥ पतिमरणस्मरोनीया  
॥ ४७ ॥ पणद्रोणभरिलोफकी ॥ तंव अस्तामाना पातला  
॥ हेकी ॥ प्रीया प्रार्थितियाकी ॥ सणे जागुस्वाश्रमा ॥ ४८  
॥ कोणो मोडितां आंगने ॥ दयाकावांजीनठालला  
॥ टी ॥ मृदुनादाटेनी ॥ तीतटी ॥ दंडप्रायप्रहृष्टला  
॥ ४९ ॥ भायमिस्तकटु ॥ अंकी ॥ हृदयथापटिमृदु  
॥ हस्ताकि ॥ नीशासमानघटिकालेखी ॥ प्रहरयंकला  
॥ टला ॥ ५० ॥ रवीसमानरवीनंदन ॥ वसनवेडिले

॥ अरिक्तवर्ण ॥ कीरि कुंडले दे दिप्यमान ॥ मादकमा  
॥ कामेखका ॥ ५१ ॥ वामहस्तीकाळपाश ॥ कवळनी  
॥ लीगदेहाचाकोश ॥ अंगुष्ठा मात्रप्राणपुस्त ॥ अक्  
॥ कोनीकाडिला ॥ ५२ ॥ गंगा लीलादक्षणपंथी ॥  
॥ अन्वेतनसेवटेनीले ॥ ५३ ॥ गाटोवाटीचालीली  
॥ सती ॥ धर्मरिजलदु ॥ ५४ ॥ येरीबळेकरनीन  
॥ मन ॥ धर्मणोस्वामीतुहीकाण ॥ तोसणोहरिजगा  
॥ चाप्राण ॥ तोमीजाणयमधर्म ॥ ५५ ॥ आयुश्या

(6A)

- ॥ चासंग्रहसरला ॥ सहज ऋणानेमदतुटला ॥ १२ ॥  
॥ तारपींड असेपडिला ॥ तोसौस्कारीसुपवीत्रे ॥ १३ ॥  
॥ येरिबालकरजेडुना ॥ देवबीजासीपतीचाप्राण ॥  
॥ तुह्यादोघांतेसाडु ॥ उकाठेसांगपां ॥ १४ ॥ धर्म  
॥ राजपीत्रुराजा ॥ मोह ॥ ममात्मज्या ॥ ज्याभात  
॥ ह्मणोनीपतीमाझा ॥ आसभावीआपुला ॥ १५ ॥  
॥ कौतुकेधमरीजह्मणे ॥ सत्यवाननवाचवीप्राणे  
॥ हेभीन्नकरुनवचन ॥ वरयेकमजमाग ॥ १६ ॥

॥ येरिहणे दुमलेन ॥ स्वशूरमासाच सुहिन ॥ तया  
॥ देउनी दीव्यलेचन ॥ हपाकरनी स्वामियों ॥ ६१ ॥  
॥ हरिइहवडुनीदुरि ॥ सकळसंपदाभरिहरि ॥  
॥ इतुके देउनी प्रथमवर्षि ॥ घगाथकरि स्वामीयों ॥ ६२ ॥  
॥ दीलेहणोनी बोलें ॥ आतां जांईपरतोन ॥  
॥ चरणचाली डुरगम ॥ धडले तुजसकुमारे ॥ ६३ ॥  
॥ येरिहणेतु शीयापाया ॥ साडुनी जातापडेकाया ॥  
॥ भ्रतारनेसी जयाठांया ॥ मजहितेथेतांन्यावे

(GA)

॥ ६४ ॥ पुत्र मोह दिन अतिथी ॥ पुजी ला असे लये  
॥ कपंती ॥ तरिकु पा उपजा तुजी याची ती ॥ मज अनु  
॥ ग्रह करा वया ॥ ६५ ॥ तं सो नी बोले वी श्वहती ॥ वांच व  
॥ चना तो भर्ता ॥ यावे प्रावे डतो चिता ॥ वर दुसरा  
॥ माग पां ॥ ६६ ॥ वैरि ही राज्या सी ॥ स्वशुर के ला व  
॥ नवाशी ॥ ते स्वराभ्य दे नो या सी ॥ सुर वसुंतो शर व  
॥ ६७ ॥ दिले मण कुपा मुती ॥ आतां जो ली या पं  
॥ थी ॥ परम संतु श्चतु श्ची श्च भक्ती ॥ मी जा लो सुश



॥ ६६ ॥ पुढती वीन वीधर्म राजासी ॥ स्वार्थनाहि  
॥ मज वीशेषी ॥ भ्रतारनेसी ज्याठां यासी ॥ मजहिते  
॥ थेवां न्यावे ॥ ६७ ॥ जीतामे लीया वीयोगनके ॥ असे  
॥ समर्थे वां करावे ॥ अणुपणु पीवतले नसे लज्जरिजी  
॥ वे ॥ तरितुज कुपाउ ॥ ६८ ॥ हां सोनी बोलु  
॥ क्रुपामुती ॥ ससवा ॥ चणी पुढती ॥ यावे गकां  
॥ आवडे तेचीती ॥ बरती सरा मजमागा ॥ ६९ ॥ मा  
॥ सापीता अश्रुपती ॥ तया सीनाहि पुत्रसेतती ॥

(४९)

- ॥ शतपुत्रदेउनीमनोथी ॥ पुरवीयाचीभगवंता ॥  
॥ ७० ॥ दिलेहणुणेउदारहस्ते ॥ आतांजाईआळीया  
॥ पंथे ॥ तुजेभीडेगोवी ॥ पतिव्रतेसुपवीत्रे ॥  
॥ ७१ ॥ दुर्भीक्षिकाठी ॥ व्याधीग्रहस्तांचे  
॥ संरक्षण ॥ केलेअ ॥ तरितुझेमन ॥ होकांश्रे  
॥ हाळमजलागी ॥ ७२ ॥ पुढतीबोलेवरहोतरा ॥  
॥ वाचवीनांतोनीजभतरि ॥ यावेगळाचतुर्थवरा ॥  
॥ मागमातभनईढिळा ॥ ७३ ॥ वीनंयवीनंवी

(9)  
॥ वैवस्वता ॥ प्रसन्नमुरेववरवोपिता ॥ वंध्याशब्दमा  
॥ श्रीयामाथा ॥ लगे असेन करावे ॥ ७४ ॥ शतपुत्रिसुक  
॥ ळदेखा ॥ करावी माझी उदरताळीका ॥ कृपा कृगासु  
॥ रनायका ॥ संतानर ॥ राखवी ॥ ७५ ॥ पीतयाला  
॥ गीबोपीलावर ॥ तैमेच ॥ शतकुमर ॥ व्यावयाला गीम  
॥ नउदार ॥ केले लुवापा ॥ ७६ ॥ तारावया संसार आ  
॥ पपती ॥ नौकाये स्वर्छागती ॥ चारी पुरुषार्थदास हो  
॥ ती ॥ संतसंगती करनीया ॥ ७७ ॥ लुजीये संगीकामीले

(9A)

॥पथा॥ तुजसीकेल्या अम्रतवार्ता ॥ अपुत्रकामेंम  
॥ जसर्वथा ॥ धाडीसीहेवडेना ॥ ७८ ॥ हीलेहणेश्रधा  
॥ देवो ॥ स्वस्तकरीमानस्योवि ॥ टाकुनीजाइअपुला  
॥ ठावो ॥ विलंबजाता ॥ ७९ ॥ भीतुष्टलोतुसी  
॥ यागुणी ॥ बोलसीतै ॥ रोसीकरणी ॥ अंम्रतप्राय  
॥ तुसीवाणी ॥ ससोदकप्रवाहो ॥ ८० ॥ येरीबोलेकरजो  
॥ उन ॥ स्वमुखेदीधलेकरदान ॥ पुत्रप्राप्तीचाउपाय

॥ कवण ॥ हे तो कळळे पाहीजे ॥ ७ ॥ वाचयी ना तो सतीर ॥ ४ ॥  
 ॥ से बोल सी वारं वार ॥ हा स्वमुखे दीधला वर ॥ तो अन्यथा होउ  
 ॥ नये ॥ ८ ॥ संकटी पडीला धर्मराज ॥ लणो मास्याची ना बदे गो  
 ॥ विले मज ॥ आतां कर रघु ॥ जे येथे अनुमान काय सा ॥ ९ ॥  
 ॥ मग लणो रचे तो अंतरी ॥ चवा भागवो कुमारी ॥ जो अट  
 ॥ क्यअसेल सर्वांपरी ॥ तो भि ॥ तुजलागी ॥ १० ॥ करजे पुनी  
 ॥ बोलि स्वमुखें ॥ नलीपे वैध्याचे पेंकें ॥ असे करावे उक्त यलो  
 ॥ के ॥ कृपालु वा जगदीना ॥ ११ ॥ हस्त कटे उनी या माथा ॥



(10A)

॥ लणेतु श्लोतु सीयाव्रता ॥ चीती सांडुनीयां नीता ॥ जाई  
॥ स्वस्थका आपु लीया ॥ ८६ ॥ सावित्रियणे त्रैलोक्यपति ॥  
॥ सखानाते आयुष्यकित्ती ॥ प्रगत बो लावेमज प्रती ॥  
॥ आपुल्या मुरेवद यान ॥ चारइत वर्षेवरि ॥ पु  
॥ रुषसंगे पुत्रपौत्री ॥ रा रि आपुलेनगरि ॥ बीहिता  
॥ चारस्व धर्मे ॥ ८७ ॥ जाणारा किले लवलाहि ॥ जाउनी  
॥ संचरे आपुले देहि ॥ सावीत्री वस्त्रांत घेई ॥ ग्रहस्ता  
॥ श्रमसंपादि ॥ ८९ ॥ वरदवदोनी दंडपांणी ॥ अडुस्य  
॥ जालात तक्षणी ॥ पतिव्रता समाधामी ॥ पतिज



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com